Seerat e Shahanshah e Bagdaad (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 342
Weekly Booklet : 342

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी मुताबिक़ दिसम्बर 2019 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी मुज़ाकरे से पहले होने वाले 2 मुख़्तलिफ़ बयानात का तहरीरी गुलदस्ता (मअ़ तरमीमो इज़ाफ़ा) बनाम

सीरते शहन्शाहे बग़्दाद

सफ़ह़ात 21

डरने की बड़ी बात 02
नानाजान की करामत 11
ए'लाने ग़ौसे आ'ज़म 13
ख़िलाफ़त नुबुव्वत से बढ़ कर नहीं 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

सीरते शहन्शाहे बग़्दाद

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **"सीरते शहन्शाहे बग़्दाद"** पढ़ या सुन ले उसे हमारे प्यारे प्यारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ो महब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ على محمّد

क़दमे ग़ौसे आ'ज़म

ह़ज़रते अबू सईद अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन हिबतुल्लाह तमीमी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं : मैं जवानी में त़लबे इ़ल्म के लिये बग़्दाद गया, उस ज़माने में इब्ने सक़ा (नामी शख़्स) मद्रसए निज़ामिया में मेरे साथ पढ़ा करता था, हम इ़बादत और सालिह़ीन (या'नी **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों) की ज़ियारत करते थे, बग़्दाद में एक साह़िब **"ग़ौस"** के नाम से मश्हूर थे और उन की येह करामत मश्हूर थी कि जब चाहें ज़ाहिर हों जब चाहें नज़रों से छुप जाएं, एक दिन मैं, इब्ने सक़ा और ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर

जीलानी जो कि उन दिनों जवान थे, उन "**ग़ौस**" की ज़ियारत को गए, रास्ते में इब्ने सक़ा ने कहा : आज मैं उन ग़ौस से ऐसा मस्अला पूछूंगा जिस का जवाब उन्हें न आएगा। (مَعَاذَاللہ) मैं ने कहा : मैं भी एक मस्अला पूछूंगा, देखूं क्या जवाब देते हैं, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : مَعَاذَاللہ ! मैं उन के सामने उन से कुछ पूछूं, मैं तो उन के दीदार की बरकतों का नज़ारा करूंगा। जब हम उन ग़ौस के यहां ह़ाज़िर हुए तो उन को अपनी जगह न देखा, थोड़ी देर में देखा तशरीफ़ फ़रमा हैं, इब्ने सक़ा की त़रफ़ निगाहे ग़ज़ब की और फ़रमाया : "**तेरी ख़राबी ऐ इब्ने सक़ा ! तू मुझ से वोह मस्अला पूछेगा जिस का मुझे जवाब न आए, तेरा मस्अला येह है और उस का जवाब येह है, बेशक मैं कुफ़्र की आग तुझ में भड़क्ती देख रहा हूं।**" फिर मेरी त़रफ़ नज़र की और फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम मुझ से मस्अला पूछोगे कि मैं क्या जवाब देता हूं, तुम्हारा मस्अला येह है और उस का जवाब येह, ज़रूर तुम पर दुन्या इतना गोबर (ग़लाज़त) करेगी, तुम कान की लौ तक उस में ग़र्क़ हो जाओगे, येह तुम्हारी बे अदबी का बदला है। फिर ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ की त़रफ़ नज़र की, आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ को अपने नज़्दीक किया और आप की इ़ज़्ज़त करते हुए फ़रमाया : "**ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! बेशक आप ने अपने हुस्ने अदब से अल्लाह व रसूल को राज़ी किया, गोया मैं इस वक़्त देख रहा हूं कि आप मज्मए़ बग़दाद में फ़रमा रहे हैं कि मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर और तमाम औलियाए वक़्त ने आप की ता'ज़ीम के लिये गरदनें झुकाई हैं।**" वोह ग़ौस येह फ़रमा कर हमारी निगाहों से ग़ाइब हो गए, फिर हम ने उन्हें न देखा। शैख़ अ़ब्दुल

क़ादिर رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ पर **अल्लाह** पाक की नज़्दीकी की अ़लामात ज़ाहिर हुईं, अलबत्ता इब्ने सक़ा एक ग़ैर मुस्लिम बादशाह की ख़ूब सूरत बेटी पर आ़शिक़ हुवा, उस से निकाह़ का कहा, उस ने कहा : ग़ैर मुस्लिम हो जाओ, उस बद बख़्त ने उस का मज़्हब क़बूल कर लिया, وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہ । (अ़ब्दुल्लाह कहते हैं :) रहा मैं, मेरा दिमश्क़ जाना हुवा, वहां सुल्त़ान नूरुद्दीन शहीद ने मुझे अफ़्सरे अवक़ाफ़ बनने पर मजबूर किया और दुन्या ब कसरत मेरी त़रफ़ आई । **"उन ग़ौस का इर्शाद हम सब के बारे में जो कुछ था पूरा हुवा ।"** (بہجۃ الاسرار، ص19)

अल्लाह पाक के वली की बे अदबी से डरें

फ़तावा ह़दीसिया में है : उस ग़ैर मुस्लिम बादशाह ने इब्ने सक़ा को मुरतद हो जाने पर अपनी बेटी तो दे दी मगर जब इब्ने सक़ा बीमार पड़ा तो उसे बाज़ार में फिंकवा दिया, भीक मांगता था और कोई न देता, एक शख़्स जो उसे पहचानता था, उस के पास से गुज़रा और पूछा तू तो ह़ाफ़िज़ था अब भी कुरआने करीम से कुछ याद है ! कहा : सब मह़्व हो गया (या'नी भूल गया) सिर्फ़ एक आयत याद रह गई है :

رُبَمَا یَوَدُّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِیْنَ ۝۲ (پ14، الحجر:2)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर काश ! मुसल्मान होते ।

इमाम इब्ने अबी अ़सरून फ़रमाते हैं : एक दिन मैं इब्ने सक़ा को देखने गया, उसे इस ह़ाल में पाया कि गोया उस का सारा बदन आग से जला हुवा है, उस पर मौत त़ारी थी, मैं ने उसे क़िब्ले की त़रफ़ किया तो वोह दूसरी त़रफ़ पलट गया, मैं ने फिर क़िब्ले को किया वोह दोबारा फिर गया । मैं जितनी बार उसे क़िब्ला रुख़ करता वोह पलट जाता यहां तक कि क़िब्ले

www.dawateislami.net

की दूसरी जानिब मुंह किये उस का दम निकल गया, “**वोह उन ग़ौस का इर्शाद याद किया करता और जानता था कि उसी गुस्ताख़ी ने इस बला में डाला।**” وَالعِیاذُ بِاللہ

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी और इमाम याफ़ई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : येह वाक़िआ़ बराबर ख़बरों से साबित है और इस के नक़्ल करने वाले ब कसरत सिक़ा आ़दिल हैं। (فتاویٰ حدیثیہ، ص415–مرآۃ الجنان، 3/268)

मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा
अल अमां क़ह्‌र है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा

येह घटाएं उसे मन्ज़ूर बढ़ाना तेरा
अ़क़्ल होती तो ख़ुदा से न लड़ाई लेते

न मिटा है न मिटेगा कभी चरचा तेरा
मिट गए मिटते हैं मिट जाएंगे आ'दा तेरे

जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआ़ला तेरा
तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे

मुन्किरे फ़ज़्ले हुज़ूर आह येह लिख्खा तेरा
सम्मे क़ातिल है ख़ुदा की क़सम उन का इन्कार

देख उड़ जाएगा ईमान का तोता तेरा
बाज़े अश्हब की ग़ुलामी से येह आंखें फिरनी

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 28, 29)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صلَّی اللہُ علٰی محمَّد

डरने की बड़ी बात

इमाम इब्ने ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस वाक़िए़ में औलियाए किराम पर इन्कार से सख़्त डांटना (मक़्सूद) है इस ख़ौफ़ से कि मुन्किर (या'नी औलियाए किराम को या इन की करामात व इख़्तियारात को न मानने वाला) इस हलाक करने वाले फ़ितने में पड़ जाएगा जो हमेशा हमेशा के लिये है, जिस से बदतर कोई ख़बासत नहीं जिस में इब्ने सक़ा पड़ गया, **अल्लाह** पाक की पनाह। हम **अल्लाह** करीम से उस के वज्हे करीम और उस के रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़

मांगते हैं कि हम को अपने एह़सानो करम के साथ इस से और हर फ़ितने व मेह़नत (आज़्मइश, रन्ज) से अमान बख़्शे नीज़ इस वाक़िए़ में इस बात की बहुत ज़ियादा तरग़ीब है कि औलियाए किराम के साथ अ़क़ीदत व अदब रखें और जहां तक हो उन पर नेक गुमान करें। (فتاویٰ حدیثیہ، ص415)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : **अल्लाह** अपने मह़बूबों का हुस्ने अदब रोज़ी करे (या'नी नसीब करे) और इन्हीं की मह़ब्बत पर ख़ातिमा फ़रमाए और इन्हीं के गुरौहे पाक में उठाए, आमीन ! आमीन।

(फ़तावा रज़विय्या, 28/401)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! **अल्लाह** पाक का हम पर बड़ा फ़ज़्लो करम है कि उस ने हमें अपने मक़्बूल बन्दों और औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم की इ़ज़्ज़तो ता'ज़ीम करने, इन का उ़र्स मनाने, मज़ारातो मुबारका पर ह़ाज़िरी देने और इन की सीरतो शान बयान करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई है। औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم **अल्लाह** पाक के पसन्दीदा बन्दे होते हैं, इन की सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद में गुज़रती है, हमें भी इसी त़रह़ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये। **अल्लाह** पाक अपने औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم पर अपनी रह़मतों की बारिशें फ़रमाता रहता है।

औलियाए किराम की शानो अ़ज़मत के लिये एक क़ुरआनी आयत पेश करता हूं, जैसा कि पारह 11 **सूरए यूनुस** आयत नम्बर 62 में इर्शाद होता है :

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

दुन्या व आख़िरत के ख़ौफ़ से बरी

इस आयत की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम (رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم) पर दुन्या में कोई ख़ौफ़ नहीं न ही वोह आख़िरत में ग़मगीन होंगे बल्कि **अल्लाह** करीम ख़ुशी व इ़ज़्ज़तो तक्रीम के साथ उन का इस्तिक़्बाल फ़रमाएगा और उन्हें हमेशा रहने वाली ने'मतें अ़त़ा करेगा।" (ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 361)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : रब तआ़ला को ग्यारहवीं बड़ी पसन्द है कि औलियाउल्लाह का ज़िक्र ग्यारहवें पारे के ग्यारहवें रुकूअ़ में फ़रमाया है। (तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान, स. 343) या'नी येह आयत जो अभी बयान की गई येह ग्यारहवें पारे के ग्यारहवें रुकूअ़ में है।

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में — मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हें वस्ले बे फ़स्ल है शाहे दीं से — दिया ह़क़ ने येह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, स. 181)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب — صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुख़्तसर तआ़रुफ़

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसे पाक बहुत बड़े वलिय्युल्लाह बल्कि औलिया के भी सरदार थे। आप का मुबारक नाम "अ़ब्दुल क़ादिर" कुन्यत "अबू मुह़म्मद" और अल्क़ाबात "मुह़युद्दीन, मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसुस्सक़लैन,

ग़ौसुल आ'ज़म'' वग़ैरा हैं, आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ 470 हि. में बग़्दाद शरीफ़ के क़रीब क़स्बा जीलान में रमज़ानुल मुबारक की पहली तारीख़ को पैदा हुए। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ वालिदे मोह़तरम की त़रफ़ से नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, सय्यिदुल अस्खिया, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ग्यारहवें पोते हैं। (بہجۃ الاسرار، ص171 ماخوذاً)

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ वालिदए मोह़तरमा की त़रफ़ से इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुश्शुहदा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारहवें नवासे हैं। जैसा कि अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने आप की वालिदए माजिदा की त़रफ़ से आप का नसब शरीफ़ बयान किया है। (نزہۃ الخاطر الفاتر، ص12)

مَاشَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم ! इस मुआ़मले में भी ग्यारवीं, बारहवीं की निस्बत है।

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

मेरे मुर्शिद, मेरे पीर, पीरों के पीर, पीरे दस्त गीर, रोशन ज़मीर, ग़ौसुस्समदानी, क़ुत़्बे रब्बानी, मह़बूबे सुब्ह़ानी, क़िन्दीले नूरानी, शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ रमज़ान शरीफ़ की पहली तारीख़ को पीर के दिन सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त दुन्या में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त मेरे पीरो मुर्शिद, पीरों के पीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के होंट मुबारक हिल रहे थे और ''**अल्लाह, अल्लाह**'' की आवाज़ आ रही थी। (الحقائق فی الحدائق، 1/139)

ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की विलादत शरीफ़ के मुआ़मले में भी बारहवीं वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुनासबत है कि प्यारे आक़ा

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी पीर शरीफ़ के दिन सुब्हे सादिक़ के वक़्त पैदा हुए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

ग्यारह सो बच्चे

मेरे मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ जिस दिन पैदा हुए उस दिन जीलान शरीफ़ में ग्यारह सो बच्चे पैदा हुए, वोह सब के सब लड़के थे और सारे के सारे वलिय्युल्लाह बने।

(تفریح الخاطر، ص15)

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा

शर्हे कलामे रज़ा : या'नी ऐ ग़ौसे पाक! आप के सर मुबारक की अ़ज़मत को कौन समझ सकता है, आप के पाउं के तल्वे जो ज़मीन पर लगते हैं, आप के तल्वों की येह शान है कि औलियाए किराम आप के मुबारक तल्वों से अपनी आंखें मलते हैं।

नबवी मींह अ़लवी फ़स्ल बतूली गुलशन हसनी फूल हुसैनी है महक्ना तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब मेरे मुर्शिदे करीम, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लड़क पन में खेलने का इरादा फ़रमाते तो ग़ैब से आवाज़ आती : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर! हम ने तुझे खेलने के वासिते नहीं पैदा किया। (الحقائق فی الحدائق، ص140) जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मद्रसे तशरीफ़ ले जाते तो आवाज़ आती : "**अल्लाह** के वली को जगह दे दो।"

(بہجۃ الاسرار، ص48 ملخصًا)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

आप को ''ग़ौस'' क्यूं कहा जाता है ?

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! लफ़्ज़े ''ग़ौस'' के मा'ना हैं ''फ़रियाद रस'' या'नी फ़रियाद को पहुंचने वाला। चूंकि हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **अल्लाह** पाक की अ़ता से, **अल्लाह** पाक की दी हुई ता़क़त से ग़रीबों, बे कसों और ज़रूरत मन्दों के मददगार हैं इसी लिये आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ''ग़ौसे आ'ज़म'' कहा जाता है। आप को ''पीराने पीर दस्त गीर'' के लक़ब से भी याद किया जाता है। (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 15 मुलख़्ख़सन)

ख़ानदाने ग़ौसे पाक

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हमारे प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद सरकारे बग़्दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम का नाम ''अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त'' था और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की वालिदए मोह़तरमा का नामे मुबारक ''उम्मुल ख़ैर फ़ात़िमा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهَا'' था। सरकारे बग़्दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम जीलान शरीफ़ के बड़े बुज़ुर्गाने दीन में से थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का लक़ब ''जंगी दोस्त'' इस लिये हुवा कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ालिसतन **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये दुन्यावी ख़्वाहिशात से दूर रहने के साथ साथ शर्ई व दीनी मुआ़मलात में ख़ूब मेह़नतो मशक़्क़त करने में अपने ज़माने में बे मिसाल थे, नेकी की दा'वत देने और गुनाहों से बचाने में मश्हूर थे और इस मुआ़मले में अपनी जान की भी परवा न किया करते थे, चुनान्चे

शराब के मटके तोड़ दिये

एक दिन आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जामेअ़ मस्जिद जा रहे थे कि ख़लीफ़ए वक़्त के चन्द मुलाज़िम शराब के मटके निहायत एह़तियात़ के साथ सरों

पर उठाए जा रहे थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जब उन की त़रफ़ देखा तो जलाल में आ गए और उन मटकों को तोड़ डाला। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के रो'ब और बुज़ुर्गी के सामने किसी मुलाज़िम को बात करने की जुर्अत न हुई, उन्हों ने ख़लीफ़ए वक़्त के सामने सारा माजरा कह सुनाया तो ख़लीफ़ा ने कहा : "सय्यिद मूसा (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) को फ़ौरन मेरे दरबार में पेश करो।" ह़ज़रत सय्यिद मूसा या'नी ग़ौसे पाक के वालिदे मोह़तरम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दरबार में तशरीफ़ लाए, ख़लीफ़ा उस वक़्त ग़ुस्से में भरा हुवा कुरसी पर बैठा था, उस ने ललकार कर कहा : "आप कौन होते हैं मेरे मुलाज़िमीन की मेह़नत ज़ाएअ़ करने वाले ?" ह़ज़रत सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं मोह़्तसिब (या'नी ह़िसाब लेने वाला) हूं और मैं ने अपना फ़र्ज़े मन्सबी अदा किया है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "आप किस के हुक्म से मोह़्तसिब मुक़र्रर किये गए हैं ?" ह़ज़रत सय्यिद मूसा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने रो'बदार लहजे में जवाब इर्शाद फ़रमाया : "जिस के हुक्म से तुम हुकूमत कर रहे हो।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस कहने पर ख़लीफ़ा पर एक दम रिक़्क़त त़ारी हुई, वोह घुटनों पर सर रख कर बैठ गया और थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर नरमी के साथ अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी (ऐ मेरे आक़ा) ! اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف اور نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) के इ़लावा मटकों को तोड़ डालने में क्या ह़िक्मत है ? इर्शाद फ़रमाया : "तुम्हारे ह़ाल पर शफ़्क़त करते हुए और तुम्हें दुन्या और आख़िरत की रुस्वाई और ज़िल्लत से बचाने की ख़ातिर।" ख़लीफ़ा पर आप की इस ह़िक्मत भरी गुफ़्तगू का बहुत असर हुवा और मुतअस्सिर हो कर आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा :

''आ़लीजाह ! आप मेरी त़रफ़ से भी मोहूतसिब मुक़र्रर हैं।'' वालिदे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने मुतवक्किलाना अन्दाज़ में इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक की त़रफ़ से जब मैं मुक़र्रर हूं तो फिर मुझे मख़्लूक़ की त़रफ़ से मुक़र्रर होने की ज़रूरत ही क्या है !'' उसी दिन से आप ''जंगी दोस्त'' के लक़ब से मश्हूर हो गए। (सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 53)

क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबुल क़ासिम है क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 20)

नानाए ग़ौसे पाक

हुज़ूरे ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नानाजान ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जीलान शरीफ़ के औलियाए किराम में से थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه निहायत परहेज़ गार होने के इ़लावा साह़िबे फ़ज़्लो कमाल और बहुत बड़े आ़लिम भी थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी आप की दुआ़एं क़बूल हुवा करती थीं)। (بہجۃ الاسرار، ص171، 172)

नानाजान की करामत

बह्जतुल असरार शरीफ़ में है : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह क़ज़्वीनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे बा'ज़ जानने वाले एक क़ाफ़िले के साथ समर क़न्द की त़रफ़ जा रहे थे, जब सह़रा में पहुंचे तो डाकूओं ने ह़म्ला कर दिया। उन्हों ने इस मुश्किल वक़्त में शैख़ अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को पुकारा तो नानाए ग़ौसे पाक ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अचानक वहां तशरीफ़ ले आए और ''سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا اللّٰه'' पढ़ा तो डाकू पहाड़ों पर चढ़ गए और कुछ जंगल की त़रफ़ भाग निकले। (بہجۃ الاسرار، ص172 ملخصاً)

फूफीजान की करामत

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की फूफीजान की कुन्यत "उम्मे मुह़म्मद" और नामे मुबारक "आ़इशा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह" था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهَا नेक और बा करामत ख़ातून थीं। लोग अपनी मुश्किलात में दुआ़एं कराने के लिये आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते थे। एक दफ़्आ़ जीलान में क़ह़त़ पड़ गया (अनाज में कमी हो गई), लोगों ने नमाज़े इस्तिस्क़ा (बारिश की दुआ़ मांगने के लिये पढ़ी जाने वाली नमाज़) पढ़ी, लेकिन बारिश न हुई तो पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की फूफीजान ह़ज़रते सय्यिदह आ़इशा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهَا के घर आए और आप से बारिश के लिये दुआ़ की दरख़्वास्त की। हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की फूफीजान अपने घर के सह़न की त़रफ़ तशरीफ़ लाईं और ज़मीन पर झाड़ू दे कर दुआ़ मांगी : "ऐ रब्बुल आ़लमीन ! मैं ने झाड़ू दे दिया और अब तू छिड़काव फ़रमा दे।" कुछ ही देर में आस्मान से इस क़दर बारिश हुई जैसे मश्क का मुंह (पानी का नल) खोल दिया जाए, लोग अपने घरों को इस ह़ाल में वापस आए कि तमाम के तमाम पानी से तर थे और जीलान ख़ुशह़ाल हो गया।

(بہجۃ الاسرار، ص173)

سیّد و عالی نَسَب در اولیاء است　　نورِ چشمِ مُصطفےٰ و مُرتضےٰ است

औलादे मुबारक

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपनी मुबारक औलाद की ज़ाहिरी बात़िनी ता'लीमो तरबियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाई, इसी वज्ह से उन में से अक्सर आस्माने इ़ल्मो फ़ज़्ल पर आफ़्ताब बन कर चमके। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के बा'ज़ साह़िब ज़ादगान के नाम येह हैं : सय्यिद अ़ब्दुल वह्हाब, सय्यिद

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़, सय्यिद अ़ब्दुल अ़ज़ीज़, सय्यिद मुह़म्मद यह़्या, सय्यिद मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह, सय्यिद अ़ब्दुल जब्बार, सय्यिद मुह़म्मद मूसा, सय्यिद मुह़म्मद ईसा, सय्यिद मुह़म्मद इब्राहीम, सय्यिद मुह़म्मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم ।

ज़ुब्दतुल आसार में है : आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की औलादे पाक से लोगों को किस क़दर इ़ल्मी फ़ैज़ ह़ासिल हुवा और किस क़दर बड़े बड़े उ़लमाए ज़माना ने इन से सीखा, इस क़िस्म के इ़ल्मी कमालात और रूह़ानी फ़ैज़ किसी और बुज़ुर्ग की औलाद से देखने में नहीं आए। (زبدۃ الآثار، ص41)

बिरादरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के एक भाई भी थे जिन का नाम सय्यिद अबू अह़मद अ़ब्दुल्लाह था। येह हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से उ़म्र में छोटे थे और इ़ल्मो तक़्वा से काफ़ी ह़िस्सा मिला था मगर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जवानी में फ़ौत हो गए थे। (مرآۃ الجنان، 3/265 ملخصاً) हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ख़ानदान नेकों का घराना था, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नानाजान, दादाजान, वालिदे मोह़तरम, वालिदए मोह़तरमा, फूफीजान, भाई और साह़िब ज़ादगान सब मुत्तक़ी व परहेज़ गार थे, इसी वज्ह से लोग आप के ख़ानदान को "अशराफ़ का ख़ानदान" कहते थे।

सल्त़नत की क़ीमत जव के बराबर भी नहीं

शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में शाहे सन्जर वालिये मुल्के नीम रोज़ (नीम रोज़ मुल्क के बादशाह) ने ख़त़ भेजा कि मैं मुल्क का कुछ अ़लाक़ा बत़ौरे जागीर आप को देना चाहता हूं ताकि आप भी मेरी त़रह़ ऐ़शो आराम की ज़िन्दगी बसर करें। सय्यिदी व मुर्शिदी हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर

जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस के जवाब में (फ़ारसी में) एक रुबाई (चार अश्आ़र) लिख भेजी (जिन का तरजमा कुछ यूं है) :

अगर मेरे दिल में मुल्के सन्जर की कुछ भी हवस हो तो शाहे सन्जर के काले रंग के ताज की त़रह़ मेरा बख़्त सियाह हो जाए या'नी मेरी क़िस्मत भी काली पड़ जाए इस लिये कि जब मुझे दौलते नीम शब (शब बेदारी व यादे ह़क़) की सल्त़नत ह़ासिल है, सल्त़नते नीम रोज़ की क़ीमत मेरी नज़र में जव के दाने के बराबर भी नहीं। (اخبار الاخیار، ص204 ملخصًا)

उन का मंगता पाउं से ठुकरा दे वोह दुन्या का ताज

जिस की ख़ातिर मर गए मुन्अ़म रगड़ कर एड़ियां

सय्यिदी मुर्शिदी ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से किसी ने पूछा : "आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने आप को वली कब से जाना ?" इर्शाद फ़रमाया कि "मेरी उ़म्र दस (10) साल की थी, मैं अपने घर से मक्तब (या'नी मद्रसे) में पढ़ने जाता तो फ़िरिश्तों को देखता, जो लड़कों से कह रहे होते थे कि "**अल्लाह** के वली के बैठने के लिये जगह कुशादा करो।" (بہجۃ الاسرار، ص48)

फ़िरिश्ते मद्रसे तक साथ पहुंचाने को जाते थे येह दरबारे इलाही में है रुत्बा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 96)

हैं पीरे पीरां ग़ौसे पाक हैं मीरे मीरां ग़ौसे पाक
महबूबे सुब्हां ग़ौसे पाक वलियों के सुल्त़ां ग़ौसे पाक
महबूबे यज़्दां ग़ौसे पाक सुल्त़ाने ज़ीशां ग़ौसे पाक
मुश्किल हो आसां ग़ौसे पाक दो दर्द का दरमां ग़ौसे पाक
फ़रमाओ एह़सां ग़ौसे पाक राह़त का सामां ग़ौसे पाक
बुलवाओ जानां ग़ौसे पाक बन जाऊं मेहमां ग़ौसे पाक

जिस वक़्त चले जां ग़ौसे पाक या पीर ! हो एह़सां ग़ौसे पाक
पूरा हो जानां ग़ौसे पाक दीदार का अरमां ग़ौसे पाक
हो जाए मेरी जां ग़ौसे पाक बस आप पे क़ुरबां ग़ौसे पाक
टल जाए शैत़ां ग़ौसे पाक बच जाए ईमां ग़ौसे पाक
उफ़ ! ह़श्र का मैदां ग़ौसे पाक लो ज़ेरे दामां ग़ौसे पाक
हो मेरी जानां ग़ौसे पाक बख़्शिश का सामां ग़ौसे पाक

(वसाइले फ़िरदौस, स. 59)

ए'लाने ग़ौसे आ'ज़म

ह़ाफ़िज़ अबुल इ़ज़ अ़ब्दुल मुग़ीस बिन अबू ह़र्ब बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम बग़्दाद में ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इज्तिमाअ़ "रिबाते ह़लबा" में ह़ाज़िर थे, उस वक़्त इ़राक़ के अक्सर मशाइख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم भी मौजूद थे और हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान फ़रमा रहे थे कि उसी वक़्त आप ने फ़रमाया : "**قَدَمِيْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِيِّ اللّٰه या 'नी मेरा येह क़दम हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है ।**" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उठे और मिम्बर शरीफ़ के पास जा कर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का क़दम मुबारक अपनी गरदन पर रख लिया । इन के बा'द तमाम ह़ाज़िरीन ने आगे बढ़ कर अपनी गरदनें झुका दीं । (بہجۃ الاسرار، 21،22 ملخصاً)

येह दिल येह जिगर है येह आंखें येह सर है जहां चाहो रख्खो क़दम ग़ौसे आ'ज़म
क़दम क्यूं लिया औलिया ने सरों पर तुम्हीं जानो इस के ह़िकम ग़ौसे आ'ज़म
दमे नज़्अ़ सिरहाने आ जाओ प्यारे तुम्हें देख कर निकले दम ग़ौसे आ'ज़म
कोई दम के मेहमां हैं आ जाओ इस दम कि सीने में अटका है दम ग़ौसे आ'ज़म
दमे नज़्अ़ आओ कि दम आए दम में करो हम पे यासीन दम ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हारे करम का है नूरी भी प्यासा मिले यम से इस को भी नम ग़ौसे आ'ज़म

(सामाने बख़्शिश, स. 126 ता 128)

अ़ब्दुल क़ादिर ने सच कहा

इमाम अबुल ह़सन अ़ली शत़नूफ़ी शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार मुबारक से शैख़ ख़लीफ़ए अक्बर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ब कसरत मुशर्रफ़ हुवा करते थे : उन्हों ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! बेशक मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को (ख़्वाब में) देखा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने फ़रमाया कि मेरा पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **“अ़ब्दुल क़ादिर ने सच कहा और क्यूं न हो कि वोही क़ुत़्ब हैं और मैं उन का निगह्बान ।”** (بہجۃ الاسرار، ص27)

सय्यिदी आ’ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान बारगाहे ग़ौसिय्यत में इन्तिहाई आ़जिज़ी का इज़्हार करते हुए लिखते हैं : कल्बे बाबे आ़ली (या’नी उस मुबारक घर का कुत्ता या’नी वफ़ादार ग़ुलाम) अ़र्ज़ करता है, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ ! **अल्लाह** ने हमारे आक़ा को इस कहने का हुक्म दिया, कहते वक़्त उन के क़ल्बे मुबारक (या’नी मुबारक दिल) पर तजल्ली फ़रमाई, नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़िल्अ़त (क़ीमती पोशाक) भिजवाई, तमाम औलिया जम्अ़ किये गए, सब के मुवाजह में (या’नी सामने) पहनाई गई, फ़िरिश्ते जम्अ़ हुए, रिजालुल ग़ैब (येह भी औलियाए किराम की एक क़िस्म है) ने सलामी दी । तमाम जहान के औलिया ने गरदनें झुका दीं । अब जो चाहे (इस से) राज़ी हो, जो चाहे नाराज़ । (फ़तावा रज़विय्या, 28/385 मुलख़्ख़सन)

सरों पर जिसे लेते हैं ताज वाले — तुम्हारा क़दम है वोह या ग़ौसे आ’ज़म
लिपट जाएं दामन से उस के हज़ारों — पकड़ ले जो दामन तेरा ग़ौसे आ’ज़म

(ज़ौक़े ना’त, स. 183)

सर पर ही नहीं बल्कि आंखों पर

चिश्ती सिल्सिले के अ़ज़ीम पेश्वा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी जवानी के दिनों में मुल्के ख़ुरासान के पहाड़ के ग़ार में इबादत करते थे, हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जब बग़्दाद शरीफ़ में येह फ़रमाया : ''قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه **या 'नी मेरा येह क़दम हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है**'' तो उस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने (वहीं बैठे बैठे येह सुन कर) अपना सर झुका लिया और फ़रमाया : ''بَلْ عَلٰی رَاْسِیْ **या 'नी बल्कि मेरे सर पर।**'' (सीरते ग़ौसुस्सक़लैन, स. 89)

जब से तू ने क़दमे ग़ौस लिया है सर पर — औलिया सर पे क़दम लेते हैं शाहा तेरा
मुह्रये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं है — ऐ ह़सन क्यूं न हो मह़फ़ूज़ अ़क़ीदा तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 29)

अपनी त़रफ़ से नहीं फ़रमाया

इमाम इब्ने ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **फ़तावा ह़दीसिया** में फ़रमाते हैं : कभी औलिया को कलिमाते बुलन्द (बड़ी बड़ी बातें) कहने का हुक्म दिया जाता है कि जो उन के बुलन्द मक़ामात से ना वाक़िफ़ है उसे पता चले या शुक्रे इलाही और उस की ने'मत का इज़्हार करने के लिये जैसा कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के लिये हुवा कि उन्हों ने अपने बयान में अचानक फ़रमाया कि मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर, फ़ौरन तमाम दुन्या के औलिया ने क़बूल किया और एक गुरौह ने रिवायत किया है कि सब औलियाए जिन्न ने भी और सब ने अपने सर झुका दिये। (فتاویٰ حدیثیہ، ص414)

बहुत से आ़रिफ़ीने किराम (**अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्गों) ने फ़रमाया है कि हुज़ूर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ''قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه'' अपनी त़रफ़ से न फ़रमाया बल्कि **अल्लाह**

पाक ने इन की कुत़्बिय्यते कुब्रा ज़ाहिर फ़रमाने के लिये उन्हें फ़रमाने का हुक्म दिया। लिहाज़ा किसी वली को गुन्जाइश न हुई कि गरदन न बिछाता और क़दम मुबारक अपनी गरदन पर न लेता बल्कि कई रिवायतों से है कि बहुत से पहले के औलियाए किराम ने हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की विलादते मुबारका से तक़रीबन सो साल पहले ख़बर दी थी कि अ़नक़रीब अ़जम में एक साहिबे अ़ज़ीम पैदा होंगे और येह फ़रमाएंगे कि **"मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर"** तो उस वक़्त के तमाम औलिया उन के क़दम के नीचे सर रखेंगे और उस क़दम के साए में दाख़िल होंगे। (فتاویٰ حدیثیہ، ص414)

ग़ौस पर तो क़दम नबी का है उन के ज़ेरे क़दम वली सारे
हर वली ने येही पुकारा है वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की
उन का दुश्मन ख़ुदा का है मक़्हूर उस की रह़मत से हो गया वोह दूर
बुग़्ज़ में जिस ने सर उभारा है वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

(वसाइले बख़्शिश, स. 579)

विलायत नुबुव्वत से बढ़ कर नहीं

ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते थे कि हर एक वली किसी न किसी के क़दम पर होता है और मैं अपने नाना या'नी नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम पर हूं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जहां से क़दम उठाया मैं ने वहीं अपना क़दम रखा मगर मैं नुबुव्वत के क़दम की जगह क़दम नहीं रख सकता, क्यूं कि येह मक़ाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के लिये ख़ास है। (بہجۃ الاسرار، ص51)

क़सीदए ग़ौसिया में हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

وَ كُلُّ وَلِيٍّ لَّهُ قَدَمٌ وَ اِنِّي عَلٰى قَدَمِ النَّبِيِّ بَدْرِ الْكَمَالِ

तरजमा : हर वली मेरे क़दम ब क़दम है और मैं रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नक़्शे क़दम पर हूं जो आस्माने कमाल के बद्रे कामिल (यानी चौदहवीं के चांद) हैं।

मुस्तफ़ा के तने बे साया का साया देखा जिस ने देखा मेरी जां जल्वए ज़ैबा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 19)

सरों पर जिसे लेते हैं ताज वाले

ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने कहा मेरी गरदन पर और कहा येह छोटा सा अह़मद भी उन्हीं में है जिन की गरदन पर ग़ौसे पाक का पाउं है, इस कहने और गरदन झुकाने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया कि इस वक़्त ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने बग़दाद शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाया है कि **"मेरा येह क़दम हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर है"** लिहाज़ा मैं ने भी सर झुकाया और अ़र्ज़ की, कि येह छोटा सा अह़मद भी उन्हीं में है । (सोह्रवर्दिया सिल्सिले के पीराने पीर) शैख़ अ़ब्दुल क़ाहिर अबुन्नजीब सोह्रवर्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपना सरे मुबारक झुका दिया और कहा : (गरदन कैसी) मेरे सर पर मेरे सर पर । सय्यिद अबू मद्यन शुऐ़ब मग़रिबी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने सरे मुबारक झुकाया और कहा : मैं भी उन्हीं में हूं, इलाही ! मैं तुझे और तेरे फ़िरिश्तों को गवाह करता हूं कि मैं ने "قَدَمِی" का इर्शाद सुना और हुक्म माना । शैख़ अ़ब्दुर्रह़ीम क़नावी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपनी गरदन मुबारक बिछाई और कहा : सच फ़रमाया सच्चे माने हुए सच्चे ने । (فتاوٰی حدیثیہ، ص414)

शैख़ ह़म्माद رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ जो कि हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म के मशाइख़ (बुज़ुर्गों में) से हैं, एक दिन उन्हों ने ग़ौसे पाक की ग़ैर मौजूदगी में फ़रमाया : "इस जवान सय्यिद का क़दम तमाम औलिया की गरदन पर होगा, इन्हें **अल्लाह** हुक्म देगा कि फ़रमाएं मेरा येह पाउं हर वलिय्युल्लाह की गरदन पर और इन के ज़माने में सब औलियाउल्लाह इन के लिये सर झुकाएंगे और इन के (अ़ज़ीम) मर्तबे के ज़ाहिर होने के सबब इन की ता'ज़ीम करेंगे ।" (نزہۃ الخاطر الفاتر، ص24)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللہُ علٰی محمَّد

हफ़्तावार रिसाला मुतालआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه / ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत अलहाज अबू उसैद उबैद रज़ा मदनी مُدَّظِلُّهُ الْعَالِی की जानिब से हर हफ़्ते एक रिसाला पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें येह रिसाला पढ़ या सुन कर अमीरे अहले सुन्नत/ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत की दुआओं से हिस्सा पाते हैं। येह रिसाला pdf में दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउनलोड किया जा सकता है। सवाब की निय्यत से ख़ुद भी पढ़ें और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम करें।

(शो'बा : हफ़्तावार रिसाला मुतालआ)